महुआ की पौष्टिकता में वृद्धि

- झारखंड के कुल 64000 हैक्टयर क्षेत्र में महुआ की खेती एवं कुल उत्पादन 60032 टन।
- आदिवासियों के खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में अहम् भूमिका।
- टिकाऊ एवं हरित कृषि के लिये उत्तम फसल।
- अत्याधिक पौष्टिक एवं गुणवत्ता की दृष्टिकोण से चावल एवं गेहूँ से बेहरत।
- कैल्शियम एवं लौह तत्व का उत्तम स्रोत एवं संतुलित एमीनो एसिड का समायोजन।
- निम्न ग्लाइसेमिक इन्डेक्स होने के कारण मुधमेह रोगियों के लिये फायदेमंद।
- हृदय रोग की संभावना को कम करना।

महुआ की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु कुछ उपयोगी संसाधन

अंकुरण
पौष्टिक आटा, दाल आहार आदि में उपयोग।

किण्वन
इडली, ढोकला आदि में उपयोग।

माल्टिंग
शिशु आहार, पौष्टिक पेय आदि में उपयोग।

पॉपींग
मीठे लड्डू, लाई, बाल आहार आदि में उपयोग।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
कांके, रांची - 834006
झारखंड, भारत
वेबसाइट: www.bauranchi.org

विज्ञान प्रसार
(विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत स्वायत संस्था)
ए–50 इंस्टिटयूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा– 201 309 (उ.प्र.) भारत
ईमेल – info@vigyanprasar.gov.in
वेबसाइट – www.vigyanprasar.gov.in

साइंस फॉर इक्विटी एम्पावरमेंट एंड डेवलपमेंट (सीड), डीएसटी, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा उत्प्रेरित व समर्थित